

फागुन का दर्द !



हे कृष्ण ! फागुन फिर से आया ।

शब्द मेरे प्रश्न बन

फिर जूझने तुमसे चले हैं ।

कह सको गर आज ,

बस इतना बताना

रंग फगुआ का क्या तुझ पर भी चढ़ा है ?

नाम तेरा सुनके जब मेरी कपोलें

रोज़ ही फगुआ का रंग बिखेरती हैं

तेरे गालों पर भी क्या ऐसा असर है ?

तेरी फगुआ भी क्या मेरी ही तरह है ?

धानी चूनर ओढ़कर फिर भोर उतरा

सतरंगी चादर बिछाने मेरे अंगना ।

लाल किरणों से धरा की रेत भी

ऐसी सजी कि

तेरी सब पटरानियाँ ज्यों

लाल चूनर में सजी हैं ।

पर,

साँझ जो डूबा है

गहरी वेदना में

रंग उसका क्या

ये क्या तुझको पता है ?

सुनती हूँ तुमने किया आज़ाद ,

और उद्धार भी उन देवियों का ।

तुम ही हो उद्धारकर्ता ,

लो, ये मैं भी मानती हूँ ।

मेरी भी एक बात मानो

प्रेम से अपने मुझे

आज़ाद करके भी बता दो ।

फगुआ की चंचल बयारें

आज भी मन मोहती होंगी तुम्हारा

जानती हूँ ।

संग तेरे डोलती होंगी सभी पटरनियाँ भी

ठीक वैसे ही कि

जैसे डोलते थे संग मेरे

प्रेम रंग में डूबकर

तुम ।

बिखरे लम्हों को

अगर तुम जोड़ पाओ

माप पाओ प्रेम की गहराइयों को

तो मुझे इतना बताना ।

वेदना और प्रेम की गहराइयों में

भेद क्या है ?

तुम हो अंतरज्ञ

यह मुझको पता है

रंग फागुन का नहीं तुमसे छिपा है ।

अनगिनत पटरानियों का रंग जो तुझपर चढ़ा है ।

पर ज़रा मुझको बता दो

रंग मेरे प्रेम का क्या है ,

और फिर वेदना का कौन सा रंग ?

हे कृष्ण !

फागुन फिर से आया

कह सको गर आज ,

बस इतना बताना

तेरी फगुआ भी क्या मेरी ही तरह है ?

तेरे गालों पर भी क्या मेरा असर है ?

बस ज़रा इतना बताना ।